चतुर्थ अध्याय

'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' में प्रतिबिम्बित गांधीवादी विचारधारा का अनुशीलन

४.१. प्रस्तावना –

अनन्त गोपाल शेवड़े जी के व्यक्तित्व पर गांधीवाद का पूरा प्रभाव दिखाई देता है। उनका समस्त हिन्दी साहित्य उनके व्यक्तित्व की ही व्याख्या करता है। इस कारण उनके साहित्य पर भी गांधीवाद का प्रभाव पड़ा है। 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' उपन्यासों पर यह प्रभाव प्रकर्ष से दिखाई देता है। स्वतंत्रता-पूर्व कालीन लगभग सभी साहित्यकार गांधी जी से प्रभावित थे। अपने साहित्य के द्वारा उन्होंने स्वाधीनता-आन्दोलन को गति प्रदान की, साथ ही गांधीवादी विचारों का प्रसार भी किया। 'ज्वालामुखी' उपन्यास लिख कर शेवड़े जी ने भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया था।

गांधी-विचारधारा ने लगातार चार-पाँच दशकों तक भारतीय परिवेश को निरन्तर प्रभावित किया था। यह प्रभाव इतना गहर था कि इससे अचानक मुक्ति असम्भव थी। यही कारण है कि स्वातंत्र्योत्तर काल में गांधी जी की मृत्यु के पश्चात् भी पुरानी पीढ़ी के साहित्यकारों ने गांधीवाद को अपनाया और भारत के नवनिर्माण के लिए उसे उचित ठहराया। स्वाधीनता-प्राप्ति के पश्चात् देश में जो अगांधीत्व और भ्रष्टाचार फैल गया, उससे ये साहित्यकार बहुत ही व्यथित हुए। अतः इस स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए उन्होंने गांधीवाद की पुनःप्रतिष्ठा करते हुए एक ओर स्वार्थी सत्ता का विरोध किया, तो दूसरी ओर अपने नायकों के द्वारा सत्य, अहिंसा तथा सत्याग्रह का महत्त्व प्रतिपादित किया। 'भग्नमन्दिर' उपन्यास में भी शेवड़े जी ने यही प्रयास किया है।

प्रेमचन्द के पश्चात् अनेक उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों के द्वारा गांधी-दर्शन का प्रसार किया, जिनमें अनन्त गोपाल शेवड़े जी का स्थान शीर्ष है। डॉ. गुंजीकर इस सम्बन्ध में लिखते हैं –

> "प्रेमचन्द के उपरान्त शेवड़े जी ही एकमात्र उपन्यासकार हो गए हैं, जिन्होंने उनके गांधीवादी आदर्श को अपने उपन्यासों में इतने स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। उनके 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' उपन्यास तो स्पष्ट गांधीवादी आदर्श को लेकर लिखे गए उपन्यास हैं। इसलिए प्रो. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय ने 'आज की उपन्यास-कला' नामक लेख में शेवड़े जी को स्पष्ट गांधीवादी विचारधारा के लेखक

कहा है।" १

शेवड़े जी के राजनीतिक तथा सामाजिक उपन्यासों में उनका गांधीवादी दृष्टिकोण नजर आता है। 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' में तो गांधीवादी आदर्श की घोषणा उन्होंने स्पष्ट रूप से की है। 'ज्वालामुखी' उपन्यास के नायक अभयकुमार का यह कथन गांधीवादी दृष्टिकोण की ही घोषणा करता है -

> " गांधी जी के दर्शन में मेरी पूरी आस्था है और यह मेरा पूर्ण विश्वास है कि अहिंसा के मार्ग से ही भारत शीघ्र और पूर्णतया सफल हो सकता है।" २

इसी प्रकार 'भग्नमन्दिर' उपन्यास का नायक धनंजय कहता है -

> "प्रारब्ध ने ही हमें गांधीवादी मार्ग पर चलने के लिए प्रवृत्त किया है और इस मार्ग का सारे विश्व में प्रचार एवं प्रसार करना हमारा धर्म है, मिशन है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि इसी मार्ग से जटिल से जटिल समस्याएँ सुलझ सकती हैं, वह हिंसा के दुश्चक्र से मुक्त हो सकता है और हिंसात्मक युद्ध के विध्वंस से मानवता को तथा दुनिया को बचा सकता है।" ३

अतः दोनों उपन्यास पूर्णतः गांधीवादी हैं। इन उपन्यासों में प्रतिबिम्बित गांधीवादी विचारधारा का अनुशीलन करने से पहले उनके प्रमुख गांधीवादी चरित्रों का परिचय प्राप्त कर लेना अनुचित न होगा।

४.२. 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' के प्रमुख गांधीवादी चरित्र -

४.२.१. 'ज्वालामुखी' के प्रमुख गांधीवादी चरित्र -

'ज्वालामुखी' की कथावस्तु सन् १९४२ के स्वतंत्रता-पूर्व भारतीय परिवेश पर प्रकाश डालती है। इसमें तत्कालीन गांधीवादी राजनीतिक चेतना का अंकन हुआ है। यह अंकन अन्याय के विरूद्ध अहिंसात्मक आन्दोलन, राजनीतिक अस्त्र के रूप में सत्याग्रह का प्रयोग, अन्यायी के हृदय-परिवर्तन में आस्था तथा छद्म गांधीवादी चरित्रों के रहस्योद्घाटन के द्वारा किया है। गांधीवाद के आदर्शों पर आधारित बयालीस की क्रान्ति का यथार्थ चित्रण उपन्यास के शीर्षक को सार्थक करता है। उपन्यास के प्रत्येक प्रमुख चरित्र पर गांधीवादी विचारों का

स्पष्ट प्रभाव है। इस सम्बन्ध में डॉ. गुंजीकर लिखते हैं -

" 'ज्वालामुखी' उपन्यास पर महात्मा गांधी जी के राजनीतिक विचारों की पूरी-पूरी छाया है और हर पात्र गांधी जी के विचारों से अलग नहीं होता।" ४

'ज्वालामुखी' के प्रमुख गांधीवादी पात्रों में अभयकुमार, उसकी माँ तथा पत्नी विजया, दीनबन्धु तथा उनकी पत्नी लक्ष्मी, तो गौण गांधीवादी पात्रों में मजिस्ट्रेट चौधरी, उनकी पत्नी, बाबा मानवदास, जानकीबाई, रामेश्वरी, सरस्वतीबाई तथा शान्ता आदि आते हैं।

**** अभयकुमार -***

अभयकुमार उपन्यास का नायक है, जो गांधी जी एवं उनके सिद्धान्तों के प्रति असीम आस्था रखता है। वह व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं से मुख फेर कर देश की स्वाधीनता के लिए अंग्रेजी शासन से लोहा लेता है। वस्तुतः वह भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि है, जिसमें राष्ट्र की आत्मा झंकृत होती है। हम उसे गांधी-युग का प्रतिनिधि चरित्र भी कह सकते हैं, क्योंकि कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन के साथ गांधीवाद के सभी तत्त्वों का उसके जीवन में समाहार हुआ है, जो आसपास के वातावरण को प्रकाशित करने में ही अपने जीवन की सार्थकता मानता है। उसे इस बात का पूरा विश्वास है कि देश के मन को गांधी को छोड़ कर और कोई जानता ही नहीं। गांधी जी की विश्वबंधुत्व की भावना से वह पूरी तरह प्रभावित है। अभय स्वदेशी व्रत का पालन करते हुए खादी कुर्ता और धोती पहनता है। इसी प्रकार संयत विवाहित जीवन जीते हुए वह ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता है। गांधी जी को वह भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रतीक मानता है।उसे लगता है -

" गांधी व्यक्ति नहीं, एक उत्क्रान्ति है।" ५

सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह जैसे गांधीवादी तत्त्व अभय में ठूँस-ठूँस कर भरे हैं। वह मानता हैं -

" सत्याग्रही तो वहीं है, जो अन्त तक सत्य-पथ पर चले।" ६

उसे मृत्यु का भय नहीं है, पर बिना किसी व्यक्तिगत या सामाजिक लाभ के, वह मरना नहीं चाहता है। अपना बयान लिखने के लिए जब उसे किताबें माँगने की इजाजत दी जाती है, तब वह 'गीता', 'रामायण' और गांधी जी की 'आत्मकथा' मँगवा लेता

है। ७ अदालत में अभियुक्त के कठघरे में खड़ा होकर वह निर्भयता से अहिंसा का प्रतिपादन करता है और सन् १९४२ की क्रान्ति की पृष्ठभूमि पेश करता है। उसका ध्येय है -

" अपने देश की आजादी, अर्थात् विदेशी शासन से पूर्णतः मुक्ति।" ८

सत्य तक पहुँचने के लिए वह हमेशा घटना की पृष्ठभूमि पर जोर देता है। उसका विश्वास है -

" जब चारों तरफ भय, झूठ और लोभ का वातावरण फैल जाता है, नैतिकता का ऱ्हास हो जाता है, तब सत्य की आवाज उस समय के नक्कारखाने में तूती की आवाज भले ही साबित हो और उसका सुनने वाला न मिले, फिर भी एक समय आता है, जब नक्कारों की अल्पजीवी ध्वनि शान्त हो जाती है और सत्य के संगीत के स्वर, समय का बल पाकर, अधिकाधिक मधुर, अधिकाधिक व्यापक और अधिकाधिक बुलन्द हो जाते हैं।" ९

गांधी जी के मार्ग पर अभय का पूर्णतः विश्वास था। उपन्यासकार लिखते हैं -

"गांधी-तत्त्व पर पूर्ण आस्था, पूर्ण निष्ठा होने के कारण स्वप्न में भी किसी चिंउटी को दुखा पना उसके लिए असंभव था। गांधी जी के जीवन-दर्शन के बारे में उसे जरा भी शंका नहीं थी, कोई असमंजस नहीं था ... भारत के दास्य-विमोचन का सब से सरल, सब से सुन्दर और सब से सीधा रास्ता गांधी जी ने ही बताया था, ऐसी उसकी धारणा थी .... अपनी जान बचाने के लिए वह असत्य का आश्रय कभी न लेता।" १०

स्वाभिमानी अभय प्राणों की भीख माँगने के खिलाफ है। तभी तो वह बचाव का वकील लेने से इन्कार कर देता है। वह जानता है कि सच्ची प्रीति ही दिव्यत्व की ओर ले जाती है। इसलिए वह विजया को लिखता है -

"तुम्हें स्मरण होगा कि विवाह के अवसर पर तुमने मुझे वरमाला पहनाई थी .... उसमें तथा फाँसी की रस्सी में विशेष अन्तर नहीं है। दोनों ही प्रीति के प्रतीक हैं - एक मानव का मानव से

मिलन कराती है, तो दूसरी मानव का परमेश्वर से। दोनों ही मिलन के प्रतीक हैं, एक ही दिव्य शक्ति के दो रूप हैं। ... सच्चा पुरूष वही है, जो फाँसी की रस्सी पर भी उसी मस्ती और मौज से झूले, जिस मस्ती से वह प्रीति के आलिंगन में झूमता है, क्योंकि सच्ची प्रीति दिव्यत्व की ओर ले जाने वाली होती है, विलास की ओर नही।"११

अंत में वही अभय हँसते-हँसते फाँसी की वेदी पर लटक जाता है, फिर भी अगली बार स्वतंत्र भारत में जन्म लेने की ख्वाहिश उसके मन में है। १२

• विजया –

अभय की पत्नी विजया राष्ट्रीय वृत्ति की महिला है। अभयकुमार का देश प्रेम तथा उसकी जीवन-निष्ठा देख कर वह उसकी ओर आकर्षित होती है। उसका प्रेम विवाह में परिवर्तित होकर चिरन्तन बन जाता है। अभय के साथ वह भी राष्ट्रीय आन्दोलन में कूदना चाहती है। १३ वह यह भी चाहती है कि सभी भारतीय अंग्रजों के प्रति असहयोग की नीति अपनाए, तभी भारत जल्दी ही स्वतंत्र होगा।

विजया का गांधी जी एवं उनके सिद्धान्त पर अटूट विश्वास है। गांधी जी की तरह वह भी कम-से-कम आवश्यकताओं में जीने में विश्वास करती थी। गांधी जी की सादगी का उस पर जबर्दस्त प्रभाव है। इसी कारण ही अपने धनी चाचा का घर छोड़ कर वह अभय की छोटी कुटिया में भी स्वर्ग-सुख का अनुभव करती है। वह खुद को पति के रास्ते की कठिनाई नहीं बनने देती। नारी को वह बन्धन और कमजोरी का नहीं, तो मुक्ति और शक्ति का प्रतीक मानती है। १४

विजया जीवन भर अभय का साथ देती ही है, मरने पर भी उसका साथ नहीं छोड़ती है। अभय की शवयात्रा में पुलिस की लाठी और गोली का शिकार होकर वह शहीद बन जाती है। इसप्रकार विजया गांधी जी एवं देश के प्रति पूरी तरह समर्पित दिखाई देती है।

• अभय की माँ –

अभयकुमार की माँ एक गांधीवादी महिला है। उसके लिए गांधी जी किसी देवता से कम नहीं है। वह गांधी जी को अवतार-पुरूष मानती थी। इसलिए वह कहती है –

"देखो बेटा, गांधी जी तो अवतार-पुरूष हैं .... उनकी सेवा
कर सको, तो समझना कि साक्षात् भगवान की तुमने सेवा की।" १५

इसलिए ही वह गांधी जी का अभय के नाम लिखा पत्र अपनी पूजा की पोथी में रख देती है। गांधी जी के दर्शन में उसे पूर्णतः विश्वास है। उसने गांधी जी का चरखा स्वीकार कर लिया है और रोज नियम से कातती है। वह 'गीता' नियमित पढ़ती है और 'रघुपति राघव राजाराम' की धुन गुनगुनाया करती है।

गांधी जी के हृदय-परिवर्तन के तत्त्व में उसका पूर्णतः विश्वास था। जिन्होंने उसका अपमान किया, उनके लिए भी उसके दिल में स्नेह ही था। उसका हृदय बहुत ही विशाल था। अभय को गिरफ्तार करने के लिए आये पुलिस अफसरों के सिर पर अक्षत फेंकते हुए वह कहती है -

"तुम भी मेरे देशवासी हो, ईश्वर तुम्हारा भी मंगल करें।" १६

बड़ी-से-बड़ी विपत्ति आने पर भी वह बिल्कुल विचलित नहीं होती है। अभय के लिए तो वह साक्षात् दिव्य शक्ति का स्वरूप थी। ईश्वर में उसकी पूरी श्रद्धा है। कई दिनों के वियोग के बाद अभय के दर्शन हो जाने पर वह सत्यनारायण की पूजा करना चाहती है। गांधी जी के अहिंसा, अपरिग्रह आदि तत्त्वों में उसका पूरा विश्वास था। अहिंसा के बारे में उसके निम्न विचार दृष्टव्य हैं -

"जो प्राण मनुष्य दे नहीं सकता, उसे लेने का क्या हक है ? यह
अधिकार तो परमात्मा को छोड़ कर और किसी का नहीं है।" १७

अभय और विजया जब शहीद हो जाते हैं, तब यह बूढ़ी माँ अपना सब कुछ शान्ता को दे देती है और काशी जाकर वहां भजन-पूजन के साथ चरखा चलाती है। अन्त में १५ अगस्त १९४७ के दिन, भारत को स्वतंत्र होते देख, स्वप्न की परिपूर्ति की खुशी में वह अपनी आँखे सदा के लिए बंद कर देती है। अभय की माँ पर शेवड़े जी की माँ का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

• दीनबन्धु तथा उनकी पत्नी लक्ष्मी -

दीनबन्धु पर गांधीवाद का प्रभाव प्रकर्ष से दिखाई देता है। शेवड़े जी स्वयं आजादी के आन्दोलन से प्रभावित थे। अतः देश के लिए मर मिटने वाले लोगों को उन्होंने करीब से

देखा था। उनकी आदतें, जिद आदि से वे भली-भाँति परिचित थे। तभी तो वे दीनबन्धु जैसे गांधीवादी चरित्र का चित्रण सजीवता से कर पाये। उनके ही शब्दों में -

> "यह दीनबन्धु भी बड़ा विचित्र आदमी है। ऐसा कोई आन्दोलन नही, जिसमें ये महाशय साल-छः महीने की जेल न काट आये हो। सोलह साल की कच्ची उमर में ही गांधी जी के सन् इक्कीस के असहयोग आन्दोलन का बिगुल सुना। जनाब माँ-बाप को बिना बताये ही दफा १४४ भंग कर जेलखाने पहुँचे। ..... फिर सन् १९२३ के नागपुर के झण्डा-सत्याग्रह में सरदार वल्लभभाई पटेल की सेना में भरती हो गये। सन् तीस में आन्दोलन शुरू हुआ, तो बुलेटिन बाँटते-बाँटते गिरफ्तार कर लिर गये। .... सन् १९४० में व्यक्तिगत सत्याग्रह छिड़ा, तो विनोबा भावे के पीछे आप भी हाजिर। यानी कभी भी देश की पुकार हुई हो और दीनबन्धु उसमे पीछे रहे हो,यह असम्भव है।" १८

खाली वक्त में वे चरखा चलाते थे।

दीनबन्धु की पत्नी लक्ष्मी भी राष्ट्रीय विचारों की महिला थी। वह पति के पथ में बाधा नहीं बनना चाहती। विजया की तरह वह भी सादगी की प्रतिमूर्ति है। कम से कम आवश्यकताओं में जीने में उसका विश्वास है। उपन्यासकार लिखते हैं -

> "दस रूपये लाकर दिये, तो वही आराम और दस पैसे लाये, तब भी वही।" १९

जब अभयकुमार को फाँसी की सजा सुनाई जाती है, तब दीनबन्धु और लक्ष्मी - दोनों उसकी रक्षा के लिए व्रत -उपवास रखते हैं। २०

'ज्वालामुखी' के गौण गांधीवादी पात्रों में मजिस्ट्रेट चौधरी, उनकी पत्नी, बाबा मानवदास, सब इन्स्पेक्टर गुलाबराव की पत्नी जानकीबाई, मुखिया रामनाथ की पत्नी रामेश्वरी, कन्या पाठशाला की अध्यापिका सरस्वतीबाई, शान्ता तथा दरोगा की पत्नी आदि आते हैं। रामदास तथा सोमादर्जी भी गांधीवादी विचारधारा के प्रति सहानुभूति रखने वाले पात्र हैं।

सतपुड़ा की पहाड़ी पर रहने वले स्वामीजी भी गांधीवादी है, जो राजनीति और

अध्यात्म का समन्वय करना चाहते हैं। मजिस्ट्रेट चौधरी एक देशभक्त हैं, लेकिन सरकारी नौकर होने के कारण वे अपनी देशभक्ति को प्रकट होने नहीं देते। अन्त में नौकरी से इस्तीफा देकर वे अपनी देशभक्ति की घोषणा करते हुए दिखाई देते हैं। उनकी पत्नी स्पष्ट रूप से गांधी जी तथा उनके विचारों के प्रति समर्पित है। वह एक राष्ट्रीय, तेजस्वी विचारों की महिला है। अभय को लेकर वह बार-बार अपने मजिस्ट्रेट पति से झगड़ती है। वह अभय की मुक्ति के लिए शतचण्ड़ी का पाठ बिठाती है तथा ईश्वर से बिनती करती है कि वह अभय की रक्षा करें। **२१** अभय की फाँसी की सजा की खबर सुन कर उसकी दशा दयनीय बन जाती है। अन्त में जब अभयकुमार की शव्यात्रा निकाली जाती है, तब वह भी उसमें शामिल होती है।

बाबा मानवदास एक मानवतावादी संत है, जो भगवद्भक्ति के साथ ही मानव-सेवा का भी संदेश दिया करते थे। वे मानते थे कि मानव की सेवा ही ईश्वर को पाने का एकमात्र मार्ग है और भक्ति के साथ कर्म का समन्वय होना चाहिए। उनके हाथ में झाड़ू, दवा का बक्स और स्लेट-पेंसिल आदि उपकरण भी दीखते, जिसके फलस्वरूप गांव की सफाई, मरीजों और पीड़ितों की सेवा तथा साक्षरता-प्रसार आदि कार्यों में काफी तरक्की होती थी। वे गांधी जी के बड़े भक्त थे। उनकी धारणा थी कि 'गीता' में भगवान कृष्ण ने जो आश्वासन दिया था, उसी के अनुसार गांधी जी का अवतार हुआ है। एक बार सेवा ग्राम जाकर वे गांधी जी से भी यही कह आये थे। **२२** सब इन्स्पेक्टर गुलाबराव की पत्नी जानकीबाई भी एक गांधीवादी महिला है, जो पति के कारतुसों की संदूक कुएँ में ड़ाल देती है। **२३** इसी प्रकार मुखिया रामनाथ की पत्नी रामेश्वरीदेवी राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं द्वारा निकाले गए जुलूस को प्रणाम करते हुए उसकी आरती उतारती है।

कन्या पाठशाला की अध्यापिका सरस्वतीबाई जुलूस में उत्साह से सहभाग लेती है और शहीद हो जाती है। शान्ता एक स्त्री-कार्यकर्ती है, जो गांधी जी के सिद्धान्तों पर पूरी आस्था रखती है। वह नागपुर के वीमेन्स कॉलेज में बी. ए. में पढ़ती थी। उसके पिता सन् १९२३ के झण्ड़ा-सत्याग्रह में जेल में भूख-हड़ताल करते हुए मरे थे। पिता का ऋण चुकाने के लिए वह नौ अगस्त १९४२ की क्रान्तिज्वाला में अपनी आहुति देने को तत्पर थी। गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद वह अपने आप को नहीं रोक सकी और आन्दोलन में कूद पड़ी।

२४ अभय के प्रति उसके मन में असीम सहानुभूति है। वह उसे अपना भाई मानती है। दरोगा की पत्नी एक अन्य गांधीवादी महिला है, जो अभय को एक साधु-संन्यासी समझ कर भोजन और आश्रय देती है, लेकिन गिरफ्तारी की आशंका से उसे घर छोड़ने की सलाह देती है। अभय के जाने के बाद वह उसकी रक्षा के लिए जप करती है।

इसप्रकार 'ज्वालामुखी' के लगभग सभी चरित्रों में गांधी जी तथा उनके सिद्धन्तों के प्रति पूरी आस्था दिखाई देती है।

४.२.२. 'भग्नमन्दिर' के प्रमुख गांधीवादी चरित्र –

'भग्नमन्दिर' उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर कालीन भारतीय परिवेश पर प्रकाश डालता है। उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य पत्रकारिता का गांधीवादी आदर्श प्रस्तुत करना तथा भारत में गांधी-विचारधारा की पुनःप्रतिष्ठा करना रहा है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए शेवड़े जी ने एक ओर छद्म गांधीवादी चरित्रों का रहस्योद्घाटन किया है, तो दूसरी ओर सच्चे गांधीवादी चरित्रों का निर्माण किया है। 'भग्नमन्दिर' के धनंजय, गीता, भोलानाथ तथा बाबाजी आदि सच्चे गांधीवादी चरित्र हैं। इन चरित्रों के द्वारा गांधी-विचारधारा का आदर्श प्रस्तुत किया है। मुख्यमंत्री पण्डित पूरणचन्द्र जोशी, मनमोहन बाबू तथा तारामतीदेवी आदि छद्म गांधीवादी चरित्र हैं, जो गांधीवाद के प्रति सच्ची निष्ठा नहीं रखते, लेकिन यश, कीर्ति, सत्ता, पद-प्रतिष्ठा और निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपने को गांधीवादी घोषित करते हैं। ऐसे चरित्रों का रहस्योद्घाटन कर शेवड़े जी ने भारत में फैले अगांधीत्व तथा भ्रष्टाचार पर प्रकाश डाला है।

**** धनंजय –***

'भग्नमन्दिर' उपन्यास का नायक धनंजय एक गांधीवादी चरित्र है। उसके व्यक्तित्व में समग्र गांधीवादी विचार ठूँस-ठूँस कर भरे हैं। वह 'युगान्तर' नामक तेजस्वी राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र का सम्पादक है। स्वतंत्रता-पूर्व काल में भी वह 'युगान्तर' के माध्यम से अंग्रेजी शासन से लोहा ले रहा था। दुःख की बात यह कि स्वातंत्र्योत्तर काल में भी उसे देशी नेताओं के साथ संघर्ष करना पड़ता है। वह एक आदर्श पत्रकार है और पत्रकारिता के माध्यम से वह देश की सेवा करना चाहता है। पत्र-संपादन उसके लिए रोजगार नहीं था, एक मिशन था। गांधी जी के न्यासी-तत्त्व में उसका पूरा विश्वास था। इसी कारण ही वह अपने आप को प्रेस का मालिक नहीं, एक ट्रस्टी मात्र मानता था। वह संस्था को एक परिवार मानता था।

उसकी मान्यता थी कि संस्था हमेशा व्यक्ति से बड़ी होती है।

धनंजय का पूरा विश्वास है कि केवल गांधी जी के कारण ही हमें स्वतंत्रता मिल गयी है। **२५** इस कारण स्वातंत्र्योत्तर भारत की नवनिर्मिति करते समय गांधी जी के सिद्धान्तों को ही अपनाना होगा। लेकिन स्वतंत्रता-प्राप्ति के उपरान्त पूरे देश में अगांधीत्व फैल गया, जिसके फलस्वरूप गांधी जी केवल मौखिक श्रद्धा और आदर की वस्तु बन गए। आचार और विचार में अगांधीत्व सिर से पैर तक भर गया। **२६** इससे धनंजय चिन्तित है। वह स्वयं तो राजनीति में हिस्सा नहीं लेना चाहता, फिर भी उसमें परिवर्तन चाहता है। अपने पत्र के माध्यम से जब वह भ्रष्टाचारी मंत्रियों की पोल खोल देता है, तब मुख्यमंत्री के द्वारा पत्र का प्रकाशन बंद करवाने के लिए अनेक प्रयास किये जाते हैं। फिर भी कर्मचारियों की मदद से पत्र का प्रकाशन जारी रखने में उसे सफलता मिलती है। अन्त में धनंजय की जीत होती है। यह जीत केवल धनंजय की ही नहीं है, तो समग्र गांधी-सिद्धान्तों, न्याय, सत्य तथा धर्म की जीत है, क्योंकि धनंजय न्याय, सत्य, धर्म तथा गांधी-सिद्धान्तों का प्रतीक है।

गांधीवादी मार्ग के प्रति धनंजय के मन में असीम आस्था है। वह कहता है -

> "प्रारब्ध ने ही हमें गांधीवादी मार्ग पर चलने के लिए प्रवृत्त किया है और इस मार्ग का सारे विश्व में प्रचार एवं प्रसार करना हमारा धर्म है, मिशन है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि इसी मार्ग से जटिल से जटिल समस्याएँ सुलझ सकती हैं, वह हिंसा के दुश्चक्र से मुक्त हो सकता है और हिंसात्मक युद्ध के विध्वंस से मानवता को तथा दुनिया को बचा सकता है।" **२७**

धनंजय खुद को गांधी जी का भाट मानता है। गांधी जी के आदेशानुसार उसने कॉलेज छोड़ कर असहयोग आन्दोलन में हिस्सा लिया था। सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में भी उसने सक्रिय सहयोग लिया था, जिसके कारण उसे सादे तीन साल की जेल की सजा भुगतनी पड़ी थी। वह मानता है कि निष्ठा और परिश्रम से किया गया कोई भी कार्य असफल नहीं होता। व्यक्तिगत सुखों के प्रति वह एकदम बेलाग है। सामान्य जनता एवं शहीद नेताओं के प्रति उसके मन में अपार सहानुभूति है। इसी कारण ही वह 'युगान्तर' साप्ताहिक के बेचने पर मिले सारे रूपये शहीद नेता के स्मारक फंड में दे आता है। **२८** उसके मन

में एक ओर भारतीय संस्कृति के प्रति असीम आस्था है, तो दूसरी ओर पाश्चात्य संस्कृति के प्रति उतनी ही घृणा की भावना।

सन् १९४७ के समय की सांप्रदायिकता से धनंजय बहुत दुःखी बना है। उसे गांधी जी कि याद बहुत सताती है। उस पर 'गीता' का जबर्दस्त प्रभाव है। ईश्वर में उसकी असीम श्रद्धा है। गांधी जी का चरखा भी उसने स्वीकार कर लिया है। गांधी जी की तरह वह भी विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय का पक्षपाती है। २९ वह यह भी मानता है कि राज्य सत्ता पर हमेशा धर्म सत्ता का अंकुश रखना आवश्यक है। अनेक प्रसंगों में वह सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह आदि गांधीवादी तत्त्वों का समर्थन करते नजर आता है। उसका पूरा विश्वास है कि अगर हम स्वातंत्र्योत्तर काल मे भी गांधी जी के मार्ग से चलते, तो इतने गुमराह नहीं होते। ३० इसप्रकार धनंजय पूर्णतः गांधीवादी पात्र है। उस पर शेवड़े जी के व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

• गीता –

धनंजय की पत्नी गीता भी एक राष्ट्रीय विचारों की महिला है। वह सादगी तथा भारतीय संस्कृति की प्रतिमूर्ति है। गुरूजनों एवं बड़ों के प्रति उसके मन में आदर भावना है, जो भारतीय संस्कृति की विशेषता है। मुख्यमंत्री जोशी जी जब उसके घर आते है, तब वह आदर के साथ उनका स्वागत करती है। कम-से-कम आवश्यकताओं में जीने में उसका विश्वास है। धनंजय के गरीब, निर्धन एवं अभावग्रस्त घर में भी वह किसी बात का अभाव नहीं महसूस करती।

गीता में गजब का साहस एवं धैर्य है। जब सन् १९४२ के आन्दोलन के सिलसिले में धनंजय साढ़े तीन साल के लिए जेल चला जाता है, तब 'युगान्तर' के प्रकाशन की जिम्मेदारी वह खुद सँभालती है। प्रेस को आग लगने पर वह बड़ी निष्ठा एवं परिश्रम से प्रेस का पुनर्निर्माण करवाती है। प्रेस के लिए वह गहनों का त्याग करने में भी नहीं हिचकिचाती है। जमानत भरने के लिए जब दो हजार रूपयों का इंतजाम नहीं हो पाता, तब वह अपने गहने बेचने के लिए तैयार हो जाती है। ३१धनंजय की भुजाओं को ही वह अपना मूल्यवान आभूषण मानती है। धनंजय के लिए तो गीता नारी नहीं, भगवती है, व्यक्ति नहीं, आदिशक्ति है। ३२ 'श्रीमद्भगवत्गीता' में उसकी असीम श्रद्धा है। वह बड़प्पन में नहीं, तो हमेशा छुटपन

में रहना ही पसन्द करती है। अपनी बेटी अर्चना को भी वह यही सबक सिखाती है -

"लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूरि ।
चींटी लै शक्कर चली, हाथी के सिर धूरि ।। " ३३

गीता में भारतीय संस्कृति की सारी विशेषताएं मिलती है। कोई भी भारतीय स्त्री पति से पहले भोजन करना नहीं चाहती। गीता भी इस परम्परा का निर्वाह करती दिखाई देती है। ३४ इससे धनंजय के प्रति उसके मन में होनेवाले असीम प्रेम का पता चलता है। १५ अगस्त १९४७ के दिन वह अपने पति को अपने हाथ से काते हुए सूत की धोती का जोड़ा प्रेम-उपहार के रूप में देती है। ३५ ईश्वर में उसकी असीम श्रद्धा है। उसका विश्वास है कि सत्य की राह पर चलने वाले को भगवान कभी भी नहीं बिसारते हैं। सत्य की शक्ति से वह भली-भाँति परिचित है -

" दुनिया के सामने सत्य नहीं छिप सकता। .... सत्य के सूर्य
पर धूल फेंकने से वह अपने आप ही पर उड़ती है।" ३६

सत् और असत् के संघर्ष में वह धनंजय का साथ देती है। धनंजय भी अनुभव करता है कि गीता कमजोरी का नहीं, तो शक्ति का स्त्रोत है। ३७ कहा जाता है कि प्रत्येक सफल पुरूष के पीछे एक नारी की प्रेरणा होती है। धनंजय और गीता के संदर्भ में यह कथन नितान्त सत्य साबित होता है। धनंज्य के समान वह भी राजनीति से दूर रहना चाहती है। वह राजनीति को अपना स्वधर्म नहीं मानती। इसलिए ही वह जोशी जी के आग्रह पर भी मंत्रिमंडल में शामिल नहीं होना चाहती है। ३८ इसप्रकार गीता का चरित्र पूर्ण रूप से गांधीवादी है। उस पर यमुना जी के व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप है।

• भोलानाथ -

भोलानाथ के चरित्र में भी गांधीवाद की कतिपय विशेषताएं मिलती है। वह एक बड़े मालगुजार का बेटा है। बचपन में वह स्वभाव से एकदम नटखट था और पढ़ने के बजाय इमली खाने में, लौंड़ों को पीटने में तथा कुश्ती खेलने मे उसे ज्यादा दिलचस्पी थी। वकालत की परीक्षा पास होने के बाद वह प्रैक्टिस शुरू कर देता है। उसके मन में बचपन से ही ईश्वर तथा साधु-संतों के प्रति आस्था रही है। वह बाबा जी का परम भक्त था। उनमें भगवान कृष्ण का अंश है, ऐसा उसका विश्वास था। उसका हृदय देशप्रेम से ओत-प्रोत है। गांधी जी

का तो वह अनन्य भक्त है। ३९ वह गांधी जी के आश्रम में महीने-दो महीने रहा था और सन् १९३० में कॉलेज छोड़ कर सत्याग्रह-संग्राम में कूद पड़ा था। इसके लिए उसे जेल की सजा भी भुगतनी पड़ी थी। ४०

भोलानाथ गांधी जी के साबरमती आश्रम में कई दिन रह चुका था, लेकिन वहां पाखाना साफ करने की नौबत आने पर वह वहां से भाग आता है। बाद में उसे गांधी जी का लिखा एक पत्र मिलता है, जिसमें उसे 'कायर' की उपाधि दे दी गई थी। इतनी डाँट-फटकार में भी गांधी जी की स्नेह-वृत्ति देख कर वह बहुत खिल उठा था। गांधी जी के प्रभाव के कारण उस पर चरखा चलाने की धून सवार हो गई तो वह चार चरखे ले आया। गांधी जी के अपरिग्रह सिद्धान्त का भी उस पर प्रभाव पड़ा हुआ दिखाई देता है। ४१

धनंजय उसका बचपन का मित्र है। भोलानाथ ही धनंजय को सब से पहले जोशी जी के प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार की जानकारी देता है। धनंजय के खिलाफ जब तलाशी और गिरफ्तारी का वारंट निकलता है, तब भोलानाथ उसे बचाने के लिए एक जमानतदार ले आता है। सत्य और असत्य की लड़ाई में वह हमेशा सत्य का पक्ष लेता है और धनंजय की सहायता करता रहता है। उसकी मूल प्रवृत्ति धार्मिक होने के कारण वह धनंजय की जीत के लिए कानूनी कामकाज के अलावा हवन और जाप का सत्र भी शुरू कर देता है। ४२ सत्य की जीत पर उसका अटूट विश्वास है। तभी तो वह धनंजय से कहता है -

> " एक क्षण के लिए भी सत्य से मत डिगना, सजा भले ही हो जाए। जो सत्य है, वही भगवान का स्मरण करके सही-सही कहना। ..... सत्य कभी छिपा नहीं रह सकता ..... सत्य की विजय हुए बिना कभी नहीं सह सकती। "४३

• संत देवाजी महाराज -

'भग्नमन्दिर' उपन्यास के संत देवाजी महाराज भारतीय आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विचारधारा के प्रतीक हैं। महात्मा गांधी जी को भी संतों और भक्तों की संगति में आनन्द आता था। उन्हें वे अपने आश्रम में रख लेते थे। बाबाजी भी गांधी जी के पास सेवा ग्राम में एक महीने रहे थे। ४४गांधी जी की सादगी तथा अन्य विशेषताओं का उन पर जबर्दस्त प्रभाव था। बाबाजी स्वयं माटी की बनी छोटी-सी कुटिया में रहते थे, जहां एक खाट, मृगचर्म

और चटाई पड़ी रहती थी। कम-से-कम आवश्यकताओं में जीनें में उनका विश्वास था। गांधी जी की तरह वे भी खेती की उन्नति करना चाहते थे। तभी तो वे उनके आश्रम के आस-पास की खेती में हल जोतते दिखाई देते हैं। बाबा जी स्वयं खेती-किसानी की तरफ ध्यान दिया करते थे। खेत जोतना, बोना, फसल काटना, गाय-भैसों की देखभाल, हल और बैलगाडियों की व्यवस्था - सब तरफ उनका ध्यान था। आश्रम में गाय-भैसों के साथ-साथ वृक्षों तथा पक्षियों की भी पूजा की जाती थी। वहां कुत्तों के लिए अलग रोटियां पकती थी। मनुष्य, वृक्ष, पशु-पक्षी - सब में भगवान का वास हैं. ऐसा बाबाजी मानते थे। दरिद्रनारायणों को भोजन देना वे एक धर्म-कर्म मानते थे।

समाज बाबाजी की तरफ आदर की दृष्टि से देखता था। उन्होंने एक बिटिया को जीवदान दिया था। ४५ बाबाजी की आंखों में प्रेम और वात्सल्य का भाव ओत-प्रोत था। एक किसान की तरह उनकी वेशभूषा सीधी-सादी रहती थी। अपने भक्तों के दुश्मनों का भी वे अकल्याण नहीं चाहते थे। बाबाजी को देख कर धनंजय को संत तुकाराम, रामकृष्ण परमहंस और गांधी जी की याद आती है। बाबाजी में उसे संत तुकाराम की भक्ति-भावना, स्वामी रामकृष्ण का आत्मज्ञान और गांधी जी का कर्मयोग और तीनों की लीनता और नम्रता का साक्षात्कार होता है। ४६

उपर्युक्त गांधीवादी चरित्रों की पृष्ठभूमि पर उपन्यासकार ने कई छद्म गांधीवादी चरित्रों का भी रहस्योद्घाटन किया है। 'भग्नमन्दिर' के पण्डित पूरणचन्द्र जोशी एक ऐसे चरित्र हैं, जो स्वतंत्रता-प्राप्ति तक गांधीवादी थे, लेकिन स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् वे गांधी जी के सिद्धान्तों की अवहेलना करने लगते हैं। मनमोहन बाबू भी इसी प्रकार के पात्र हैं। मिसेज तारामतीदेवी सहाय पर पूर्णतः पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है, फिर भी स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् वह अपने रहन-सहन में परिवर्तन लाती है और निजी स्वार्थ के लिए अपने को गांधीवादी कहलाती है।

'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' उपन्यासों के प्रमुख गांधीवादी चरित्रों का परिचय प्राप्त कर लेने के पश्चात् हम कह सकते हैं कि 'ज्वालामुखी' के अभयकुमार, विजया, दीनबन्धु तथा अभय की माँ और 'भग्नमन्दिर' के धनंजय, गीता, भोलानाथ और बाबा जी आदि चरित्र काल्पनिक नहीं है, तो लेखक की अनुभूति से निर्मित हुए हैं। दोनो उपन्यासों में लेखक हर

पात्र के साथ इतने एकाकार हो गये हैं कि ऐसा लगता है, शेवड़े जी अपनी कहानी सुना रहे हैं। किसी भी पात्र के चित्रण में कृत्रिमता नहीं दिखाई देती। सच्ची अनुभूति के बिना यह संभव नहीं हो पाता। 'ज्वालामुखी' की अभयकुमार की माँ आदर्श भारतीय नारी का प्रतीक है। इसी आदर्श की परम्परा में 'भग्नमन्दिर' की गीता का चित्रण किया है। गीता, विजया का विकसित रूप है। मुख्यमंत्री जोशी तथा धनंजय में जब संघर्ष निर्माण होता है, तब धनंजय को वह एक छाया के समान प्रेरणा देती रहती है। बिना योग्य नारी के पुरूष का जीवन व्यर्थ है, नारी का सहयोग पुरूष के लिए संजीवनी है - यही इससे स्पष्ट होता है। इन चरित्रों के द्वारा भारतीय संस्कृति की विशेषताओं तथा गांधीवादी आदर्श को प्रकाशित करने में शेवड़े जी सफल हुए हैं। 'ज्वालामुखी' का अभयकुमार कायर बन कर समर्पण नहीं करता, तो अपने आत्मिक बल के आधार पर अन्यायियों को सन्मार्ग पर लाने का प्रयास करता है। दूसरी ओर 'भग्नमन्दिर' के धनंजय और गीता जीवन-संग्राम में अटूट धैर्य और तेजस्विता धारण कर त्याग और बलिदान का उच्चादर्श प्रस्तुत करते हैं।

'भग्नमन्दिर' उपन्यास गांधी जी के सपनों के रामराज्य की कल्पना से सम्बद्ध है। इसके गांधीवादी चरित्र वर्ग-मुक्त एवं शोषण-मुक्त समाज बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। मानवीय मूल्य पुनर्जीवित कर भारतीय परिवेश में अमन-चैन, बंधुत्व, सौहार्द्र की धारा प्रवाहित करने की दिशा में ये चरित्र सक्रिय हैं। निस्संदेह शेवड़े जी के चरित्र-चित्रण में मौलिकता है, अनुभूति की सच्चाई है, कृत्रिमता नहीं।

४.३. 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' में प्रतिबिम्बित गांधीवादी विचारधारा -

अनन्त गोपाल शेवड़े एक ओर कुशल स्वतंत्रता-सेनानी हैं, तो दूसरी ओर एक निर्भीक, आदर्श पत्रकार भी हैं। अपने व्यक्तित्व के इन्हीं दो प्रमुख पहलुओं की अभिव्यक्ति उन्होंने क्रम से 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' उपन्यासों में की है। दोनों उपन्यास आदर्शवादी हैं, फिर भी इस आदर्श को यथार्थ की पृष्ठभूमि पर चित्रित किया गया है। 'ज्वालामुखी' में एक गांधीवादी स्वतंत्रता-सेनानी के, तो 'भग्नमन्दिर' में पत्रकारिता के गांधीवादी आदर्शों को प्रकाशित किया है। उनका आदर्शवाद जहां लोकमंगल चाहता है, वहां विश्वमानव की कल्पना तथा भारतीय संस्कृति की उज्ज्वल परम्परा का संरक्षण करते हुए विश्वशान्ति का संदेश देता है। ४७शेवड़े जी एक कलाकार हैं, साथ ही एक देशभक्त भी हैं, राजनीतिज्ञ नहीं। वे पूर्णतः

गांधी-दर्शन से प्रभावित हैं और गांधीवादी दृष्टिकोण उनके उपन्यासों की रीढ़ की हड्डी है। ४८ 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' उपन्यासों पर गांधीवाद का प्रभाव विशेष रूप से पड़ा है। दोनों उपन्यासों में गांधीवादी विचारधारा के कतिपय तत्त्व प्रतिबिम्बित हुए हैं, जिनकी चर्चा निम्नानुसार की जा सकती है -

४.३.१. आध्यात्मिक विचारधारा -

शेवड़े जी ने 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' में गांधी जी के आध्यात्मिक विचारों की अभिव्यक्ति अनेक प्रसंगों, घटनाओं एवं पात्रो के माध्यम से की है।

४.३.१.१. सत्य -

गांधीवादी विचारधारा में सत्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' - दोनों उपन्यासों में शेवड़े जी ने सत्य का प्रतिपादन किया है।

'ज्वालामुखी' का नायक अभयकुमार सत्य की शक्ति से भली-भाँति परिचित है। वह जानता है कि उसका पक्ष सत्य का पक्ष है। इसलिए वह कोई गवाह नहीं देना चाहता। वह कहता है -

> " जो सत्य है, वह अपने आप में सम्पूर्ण है, वह कोई गवाह नहीं चाहता। जिसे मैं स्वयं सत्य मानता हूँ और सत्य है, ऐसा जानता हूँ, उसके लिए कोई तरफदारी करने वाला न मिले, इसलिए वह असत्य नहीं हो जाता है। झूठ के लिए समर्थन की आवश्यकता होती है, छल-कपट और बनावट के बिना वह एक इंच भी आगे नहीं बढ़ सकता। पर सत्य तो सूर्य की तरह स्वयं ही प्रकाश मान है। उसे उद्भासित करने के लिए किसी मोमबत्ती की जरूरत नहीं होती।" ४९

अभयकुमार का विश्वास है -

> " जब चारों तरफ भय, झूठ और लोभ का वातावरण फैल जाता है, नैतिकता का ऱ्हास हो जाता है, तब सत्य की आवाज उस समय के नक्कारखाने में तूती की आवाज भले ही साबित हो और उसका सुनने वाला न मिले, फिर भी एक समय आता है, जब नक्कारों की

अल्पजीवी ध्वनि शान्त हो जाती है और सत्य के संगीत के स्वर, समय का बल पाकर, अधिकाधिक मधुर, अधिकाधिक व्यापक और अधिकाधिक बुलन्द हो जाते हैं।" ५०

अभय ही नहीं, 'ज्वालामुखी' के रामनाथ, सोमादर्जी, भोलानाथ जैसे पात्र भी सत्य बात कहने और उससे जो सजा मिलेगी, उसे भुगतने के लिए तैयार है। ५१

'भग्नमन्दिर' का धनंजय तो सत्य की प्रतिमूर्ति है। गांधी जी के चरणों के पास बैठ कर उसने नम्रतापूर्वक उनके सिद्धान्तों का अध्ययन किया है। उनमें से 'सत्य' का उस पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इस लिए वह अपने बयान में लिखता है -

" गांधी जी का यह आश्वासन मुझे भगवान का आश्वासन मालूम पड़ता है कि तुमने यदि सत्य का पक्ष नहीं छोड़ा, तो ईश्वर भी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि सत्य ही परमेश्वर है। " ५२

धनंजय का विश्वास है कि सत्य की हमेशा विजय होती है। इसलिए वह कहता है -

"असत्य और अधर्म पर टिकी हुई सत्ता राक्षसी होती है। वह विवेक-अविवेक का भेद नहीं करती ..... सत्य को बहुत कष्ट भोगना पड़ता है, पर अन्त में चल कर सत्य की ही विजय होती है।" ५३

धनंजय मानता है कि सत्य धर्म का प्रचार यह पत्रकारिता की पूजा का एक साधन है। इन्स्पेक्टर पाण्डे को भी वह बताता है कि सत्य को जानने और कहने में कोई संकोच-हिचक नहीं होनी चाहिए। ५४

धनंजय की तरह भोलानाथ और गीत भी सत्य के समर्थक है। गीता के विचारों में-

" सत्य के सूर्य पर धूल फेंकने से वह अपने आप ही पर उड़ती है।" ५५

भोलानाथ धनंजय को सत्य पर अटल रहने के लिए कहता है। उसका विश्वास है कि एक नहीं, हजार मुख्यमंत्री सिर पटक कर मर जायें, तब भी सत्य की विजय हुए बिना कभी नहीं रह सकती। ५६ सत्य और असत्य की लड़ाई में वह हमेशा सत्य का पक्ष लेता है और धनंजय की सहायता करता है।

४.३.१.२. अहिंसा -

'ज्वालामुखी' का अभयकुमार गांधी जी का परम भक्त है। वह कहता है -

"गांधी जी के दर्शन में मेरी पूरी आस्था है और मेरा यह पूर्ण विश्वास है कि अहिंसा के मार्ग से भारत शीघ्र और पूर्णतया सफल हो सकता है। ..... मानव के प्रश्नों का हल निकालने में हिंसा बेकार और निकम्मी साबित हुई है, अहिंसा पूर्ण समर्थ एवं उपयोगी है।" ५७

गांधी जी की तरह वह भी हिंसा को कमजोरों का शस्त्र मानता है। वह यह भी मानता हैं कि कायरों की तरह मरने से तो हिंसा भली है। गांधी जी का रास्ता कायरों का नहीं, बहादुरों का रास्ता है। कायर बन कर भागना रामनाथ तथा सोमादर्जी को भी पसंद नहीं है। अभय तो चींटी को मारना भी पाप समझता था। घुघरी की जनता को भी वह समझाता है कि चाहे तो पुलिस की वर्दियां और सरकारी कागजात जला दो, पर पुलिसों को नहीं। गांधीजी के 'करेंगे या मरेंगे' इस नारे का गलत अर्थ निकालने वाले भोलानाथ पहलवान को समझाते हुए मुखिया रामनाथ कहते हैं -

"करेंगे का मतलब है कि स्वतंत्र होकर रहेंगे और न हो पावें तो उसी के लिए लड़ते-लड़ते मरेंगे। करेंगे का मतलब खून-खराबी करेंगे, ऐसा नहीं है।" ५८

'ज्वालामुखी' में अभय की माँ भी कहती है -

"जो प्राण मनुष्य दे नहीं सकता, उसे लेने का क्या हक है ? यह अधिकार तो परमात्मा को छोड़ कर और किसी का नहीं है। फिर उसके अधिकार में दखल देने का मानव को क्या अधिकार है? " ५९

इसप्रकार 'ज्वालामुखी' के पात्र अहिंसा का प्रतिपादन करते दिखाई देते हैं। सम्पूर्ण उपन्यास में अहिंसा की हिंसा पर विजय दिखलाई है।

'भग्नमन्दिर' में एक स्थान पर अहिंसा का प्रतिपादन किया गया है। गांधीवादी विचारधारा में किसी पर जबर्दस्ती करना भी हिंसा मानी गई है। जब प्रधानमंत्री राष्ट्रीय दल के अध्यक्ष को जोर-जबर्दस्ती करके इस्तीफा देने के लिए मजबूर करते हैं, तब धनंजय का खून खौल उठता है। वह 'युगान्तर' के अग्रलेख में लिखता है -

> " जो संस्था सत्य और अहिंसा को अपना मूलमंत्र मानती है, उसमें यह हिंसा-वृत्ति क्यों दिखाई गई ..... हिंसा का दुश्चक्र बुरा होता है और वह प्रतिहिंसा को जन्म देता है। .... हिंसा असत्य है, हिंसा अन्याय है और अन्याय की कोई भी कृति हजम नहीं हो सकती।" ६०

अहिंसा-नीति को मानने वाला व्यक्ति कभी प्रतिस्पर्धी के प्रति द्वेष या घृणा की भावना नहीं रखता। धनंजय भी अपने प्रतिस्पर्धी जोशी जी के प्रति उदार-भावना रखता हुआ दिखाई देता है।

४.३.२. आचार-विषयक विचारधारा -

आचार-विषयक विचारधारा के अंतर्गत गांधी जी ने प्रार्थना-उपासना तथा व्रत-प्रतिज्ञा के साथ-साथ नैतिक नियमों की भी चर्चा की है। अपने पात्रों के द्वारा शेवड़े जी नैतिकता का प्रचार-प्रसार करने में सफल हुए हैं। विवेच्य उपन्यासों में ब्रह्मचर्य, शरीर श्रम, स्वदेशी, अपरिग्रह तथा अभय आदि व्रतों की चर्चा की गयी है। साथ ही उनमें गांधी जी के कर्म-सिद्धान्त को भी अभिव्यक्ति दी है।

४.३.२.१. व्रत-प्रतिज्ञा तथा प्रार्थना-उपासना -

गांधी विचारधारा में व्रत का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अहिंसा के उपासक के लिए गांधी जी ने ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह तथा अभय इन पाँच व्रतों को आवश्यक माना है, जिनमें से अपरिग्रह, स्वदेशी, अभय तथा ब्रह्मचर्य आदि व्रतों की चर्चा ' ज्वालामुखी' में की गई है। अपरिग्रह व्रत के पालन के लिए संचय-वृत्ति का अभाव आवश्यक होता है। अभय की माँ में संचय-वृत्ति का पूर्ण अभाव था। इसी कारण ही वह घर-गृहस्थी की चीजबस्त शान्ता को सौंप कर अपनी पूजा-पाठ की सामग्री लेकर काशी चली जाती है। ६१ प्रार्थना-उपासना में भी उसका विश्वास था। वह हमेशा 'रघुपति राघव राजाराम' की धुन

गुनगुनाया करती थी और सोमवार, एकादशी तथा शिवरात्रि के उपवास करती थी। ६२ स्वभाव से वह धार्मिक वृत्ति की महिला थी। ईश्वर में उसकी असीम श्रद्धा थी। अभयकुमार भी ईश्वर-भक्त है। तभी तो वह महादेव से प्रार्थना करता हुआ दिखाई देता है।

अभय की मुक्ति के लिए दीनबन्धु तथा उसकी पत्नी भी व्रत-उपवास रखती है। मजिस्ट्रेट चौधरी की पत्नी अभय की रक्षा के लिए प्रार्थना करती दिखाई देती है। अभय ने तो देश-सेवा का व्रत ले ही लिया था। गांधी जी के कर्म-सिद्धान्त के अनुसार स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए अभय निरंतर कर्मरत रहता है। वह स्वदेशी तथा ब्रह्मचर्य आदि व्रतों का पालन करता हुआ भी दिखाई देता है। संयत विवाहित जीवन जीते हुए वह ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता है।

'भग्नमन्दिर' का भोलानाथ भी अपरिग्रह व्रत का पालन करता हुआ दिखाई देता है। उसके सम्बन्ध में उपन्यासकार लिखते हैं -

> "भोलानाथ कर्ण जैसे उदार थे, जिसने जो मांगा, उसे दे दिया। कभी मुंशी को देते, तांगेवाले को देते, होटलों में खर्च करते, कोई गरीब मांगता, तो उसे देते, विद्यार्थियों की मदद करते, अड़ोस-पड़ोस में कोई दीन-दुखिया हो, तो उसका भी ध्यान रखते। कोई भी मिल जाए, रूपया जब तक खर्च न हो जाए, तब तक उन्हें तसल्ली नहीं। ..... अपरिग्रह का भी यह अजीब नमूना था।" ६३

धनंजय 'युगान्तर' पत्र का उपयोग कभी व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए नहीं करेगा, इसका व्रत ले चुका है। प्रार्थना-उपासना में भी उसका विश्वास है। उपन्यास में स्थान-स्थान पर वह गीता के साथ प्रार्थना करता हुआ दिखाई देता है। ईश्वर में उसकी असीम श्रद्धा थी। गीता, भोलानाथ तथा संत देवाजी महाराज भी ईश्वर के अनन्य भक्त हैं। धनंजय संयत विवाहित जीवन जीते हुए ब्रह्मचर्य व्रत का भी पालन करता है। साथ ही वह स्वदेशी व्रत का भी पालन करता है। कर्म-सिद्धान्त के अनुसार वह रात-दिन कर्मरत रहता है।

गांधी-प्रतिपादित अभय तथा शरीर श्रम इन व्र को भी विवेच्य उपन्यासों में अभिव्यक्ति मिली है। शेवड़े जी पर गांधी जी के साथ-साथ विनोबा जी का भी प्रभाव पड़ा है। 'ज्वालामुखी' उपन्यास की रचना की पृष्ठभूमि में विनोबा जी की प्रेरणा रही है, जिसे शेवड़े जी ने स्वयं

'दो शब्द' में स्वीकार किया है। 'मृत्यु' के सम्बन्ध में शेवड़े जी विनोबा जी से विशेष प्रभावित हैं। विनोबा जी के अनुसार -

> "मृत्यु शत्रु नहीं, मित्र है, अमंगल नहीं, मंगल है, ईश्वर का साक्षात्कार कराने वाली प्रतिक्रिया है। उससे भय खाने की जरूरत नहीं, वह स्वागत करने योग्य है।" ६४

मृत्यु के सम्बन्ध में गांधी जी की भी यही धारणा थी, जिसका विश्लेषण उन्होंने 'अभय' व्रत के अंतर्गत किया है। 'ज्वालामुखी' के अभयकुमार को भी मृत्यु का बिल्कुल भय नहीं है। विवाह के प्रथम दिन सुहाग रात में ही वह मृत्यु की कल्पना करते हुए दिखाई देता है। लेकिन वह बिना किसी व्यक्तिगत या सामाजिक लाभ के मरना नहीं चाहता है। जब उसे इस बात का विश्वास हो जाता है कि उसकी मृत्यु से स्वतंत्रता-प्राप्ति की स्वर्ण-बेला नजदीक आयेगी, तब उसके लिए मृत्यु जैसी घटना भी शुभ बन जाती है। इसलिए वह विजया को लिखता है -

> "तुम्हें स्मरण होगा कि विवाह के अवसर पर तुमने मुझे वर-माला पहनाई थी। तब देखा जाय, तो उसमें तथा फाँसी की रस्सी में विशेष अन्तर नहीं है। दोनों ही प्रीति के प्रतीक हैं - एक मानव का मानव से मिलन कराती है, दूसरी मानव का परमेश्वर से।" ६५

'भग्नमन्दिर' के भोलानाथ की पत्नी कुसुम मृत्युशय्या पर पड़ी है, फिर भी -

> "मृत्यु का जैसे उसे कोई भय नहीं है। सदा-सर्वदा उसके चेहरे पर परम शान्ति तथा परम आनन्द की दीप्ति ही आलोकित रहती।" ६६

स्वातंत्र्योत्तर काल में देश में फैली कर्तव्यविमुखता तथा आरामतलबीपन से 'भग्नमन्दिर' का धनंजय चिन्तित है। उसके सामने यही सवाल है कि जो परिश्रम, लगन, देशनिष्ठा जर्मनी और जापान के लोग दिखा सकते हैं, वह हम क्यों नहीं दिखा सकतें ? ६७ उसका विश्वास है कि निष्ठा और परिश्रम से किया जाने वाला कोई भी कार्य असफल नहीं होता। बाबाजी भी शरीर श्रम को महत्त्व देते थे। तभी तो वे खेत में हल जोतते दिखाई देते हैं। धनंजय भी रात-दिन अपने कार्यालय में व्यस्त दिखाई देता है।

४.३.२.२. नैतिकता –

वास्तव में सम्पूर्ण गांधी-विचारधारा नीति पर आश्रित है। 'ज्वालामुखी' का अभयकुमार भी नैतिक नियमों का पालन करता हुआ देखाई देता है। सामाजिक क्षेत्र में वह नैतिकता का पालन करता ही है, प्रेम के क्षेत्र में भी वह नैतिक नियमों का उल्लंघन नहीं करता –

> "दोनों कई बार एकान्त में मिले, किन्तु एक बार भी किसी ने मर्यादा नहीं छोड़ी और अपनी दिव्य प्रीति में कलुष नहीं आने दिया।" ६८

'भग्नमन्दिर' का धनंजय भी नैतिकता का पालन करता हुआ नजर आता है। उसके नैतिक आचार-विचारों की आधार-शिला अहिंसा है। कार्य की नैतिकता-अनैतिकता को वह अहिंसा की कसौटी पर ही परखता है। वह तो सिर्फ नैतिक मूल्यों के कारण ही प्रशासन में फैले

भ्रष्टाचार और अन्याय को हटाना चाहता है। उसे व्यक्तियों से मतलब नहीं, नीतियों से है। जोशी जी के साथ चल रहे संघर्ष में जब धनशेट्टिवार फंस जाता है, तब उसे छुड़ाना धनंजय अपनी नैतिक जिम्मेदारी मानता है और उसके छूटने के बाद चैन की साँस लेता है। ६९ धनंजय के साथ गीता भी नैतिकता की ओर ध्यान देती है। भोलानाथ में भी बुनियादी नैतिकता थी। धनंजय तथा गीता और भोलानाथ तथा कुसुम का प्रेम समर्पण तथा नैतिकता की कसौटी पर खरा उतरता है।

प्रेम के क्षेत्र में भी शेवड़े जी गांधी जी से प्रभावित थे। गांधी जी की दृष्टि में प्रेम की पवित्रता का निर्वाह करने के लिए संयम अनिवार्य होता है। जो प्रेम आगे चल कर विवाह के रूप में परिवर्तित होता है, उसी प्रेम को ही गांधी जी उचित मानते थे। शेवड़े जी भी वासना-रहित सात्विक प्रेम के समर्थक हैं। उन्होंने प्रेम को वासना के रूप में न देख कर जीवन-उन्नायक के रूप में देखा है। अपने उपन्यासों – विशेषतः ' ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' – में शेवड़े जी ने स्त्री-पुरूष के स्वाभाविक प्रेम के उज्ज्वल पक्ष का कलात्मक चित्रण किया है। 'ज्वालामुखी' के अभयकुमार और विजया तथा 'भग्नमन्दिर' के धनंजय और गीता का प्रेम वासनात्मक न होकर उदात्त है, जो आगे चल कर विवाह में परिवर्तित होता है। प्रेम की निष्कपटता ही उन्हें अपने जीवन-संग्राम में अभय प्रदान करती है। प्रेम-चित्रण में

उपन्यासकार ने कहीं भी नैतिकता का उल्लंघन नहीं किया है।

४.३.३. सामाजिक विचारधारा –

'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' में शेवड़े जी ने सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए गांधी जी के समाजलक्षी विचारों को कलात्मक रूप से अभिव्यक्ति दी है। गांधी जी की तरह शेवड़े जी भी स्त्रियों की उन्नति तथा विभिन्न क्षेत्रों में उनके सहभाग के पक्षपाती थे। साथ ही वे सेवा, सादगी आदि में भी विश्वास करते थे। समाज के सुन्दर स्वास्थ्य के हेतु वे मादक-वस्तुओं के निषेध पर बल देते हैं। इन विभिन्न गांधीवादी सामाजिक विचारों को शेवड़े जी ने विवेच्य दोनों उपन्यासों में अभिव्यक्ति किया है।

४.३.३.१. सांप्रदायिक एकता –

गांधी जी का यह विश्वास था कि जब तक भारत के विभिन्न संप्रदायों में एकता स्थापित नहीं होती, तब तक स्वराज्य प्राप्त करना तथा उसे टिकाना नितान्त असंभव है। हिन्दु-मुस्लिमों के बीच भड़क उठे सांप्रदायिक दंगों को देख कर उनका हृदय विदीर्ण हो जाता था। १५ अगस्त १९४७ के दिन जब भारत स्वतंत्र हुआ, गांधी जी स्वतंत्रता-उत्सव मनाने के बजाय नोआखाली में जा कर पीड़ितों एवं निराश्रितों के बीच घूम रहे थे। इसीलिए 'भग्नमन्दिर' के धनंजय को गांधी जी की याद बेचैन कर रही है। ७० धनंजय सांप्रदायिक एकता का पक्षपाती है।

४.३.३.२. स्त्रियों की उन्नति तथा विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग –

गांधी-विचारधारा में स्त्री-शिक्षा एवं स्त्रियों की उन्नति के बारे में मौलिक विचार प्रस्तुत किये गये है। गांधी जी को लगता था कि हर क्षेत्र में स्त्रियों का सहयोग होना चाहिए, तभी समाज एवं देश की उन्नति संभव है। ' ज्वालामुखी' के अभयकुमार के मन में भी स्त्रियों की शक्ति के बारे में जरा भी संदेह नहीं है। इसलिए वह कहता है –

> "स्त्रियां तो बहुत बड़ा काम कर सकती हैं। वे तो साक्षात् जगज्जननी हैं, शक्ति की प्रतीक हैं, सारी स्फूर्ति और प्रेरणा की स्त्रोत हैं। वे क्रान्ति में कूद पड़ें, तो हमारी विजय में क्या शक है ?" ७१

घुघरी में निकाले गये जुलूस में जितने पुरूष थे, करीब-करीब उतनी ही स्त्रियां थी। उपन्यासकार लिखते हैं –

"कई अपनी गोद में बच्चे लिए हुए थी। गांव के अगुआ लोगो ने स्त्रियों से बहुत कहा कि आज मत जाओ, गोली चलने का खतरा है, पर उन्होंने एक न मानी। गोली चले तो चले। जैसे फागू मर गया, वैसे हम भी मर जायंगी। भव-सागर तो तर जायंगी। ..... लाठी चले या गोली, हम तो जुलूस में चलेंगी ही।"७२

सोमा को भी विश्वास है कि स्वतंत्रता-आन्दोलन में स्त्रियों के सहभाग से आन्दोलन की शक्ति ज्यादा बढ़ेगी। विजया भी स्वतंत्रता-आन्दोलन में अपनी आहुति देना चाहती है और अंत में शहीद हो जाती है। शान्ता ने तो देश के लिए मर मिटने का निश्चय ही किया है। कन्या पाठशाला की अध्यापिका सरस्वतीबाई देश के लिए शहीद हो जाती है। इनके अतिरिक्त अन्य अनेक स्त्रियों की स्वतंत्रता-आन्दोलन के प्रति सहानुभूति दिखाई देती है।

इसी प्रकार 'भग्नमन्दिर' के जोशी जी भी मंत्रिमंडल में स्त्रियों के सहयोग को महत्वपूर्ण मानते हुए गीता को मंत्रिमंडल में शामिल होने के लिए आग्रह करते हैं। ७३ यह दूसरी बात है कि इसके पीछे उनका उद्देश्य धनंजय को अपनी प्रभाव-परिधि में लाने का था। नारी के आदर्श-रूप के चित्रण की प्रवृत्ति नारी के प्रति सम्मान-भावना का ही परिणाम है। उसके त्याग, सहिष्णुता, औदार्य और स्नेह का निरूपण कर उपन्यासकार ने उसे अद्भुत गरिमा प्रदान की है। गीता के रूप में शेवड़े जी ने भारतीय स्त्री का आदर्श प्रस्तुत किया है।

४.३.३.३. सफाई-सादगी -

गांधी जी की सादगी का प्रभाव 'ज्वालामुखी' की विजया तथा लक्ष्मी पर पड़ा हुआ दिखाई देता है। विजया अपने धनी चाचा का परिवार छोड़ कर अभय के निर्धन घर में भी सुख और मांगल्य का अनुभव करती है। उपन्यासकार लिखते हैं -

" कभी दाल है, तो सब्जी नहीं, दूध फट जाए, तो चाय की प्याली तक नहीं। ... मैके से वह जो साड़ियां लाई, उसके बाद एक गज कपड़ा भी नहीं, नया खरीदने का सामर्थ्य नहीं। कांच की चूड़ियों को छोड़ कर और कोई आभूषण नहीं। " ७४

फिर भी वह सुखी है। कम-से-कम आवश्यकताओं के साथ जीने में उसका विश्वास है।

दीनबन्धु की पत्नी लक्ष्मी का भी वही हाल है। पति के सुख में ही वह अपना सुख मानती है। गहनों के आकर्षण से वह कोसों दूर है।

'भग्नमन्दिर' की गीता सादगी की प्रतिमूर्ति है। कमरे की सफाई की ओर भी वह ध्यान देती है। सफाई के कारण उसका घर मन्दिर की तरह पवित्र लगता है। गांधी जी ने स्वास्थ्य के लिए घर तथा आंगन की सफाई को महत्त्वपूर्ण माना था।

गीता को गहनों का बिल्कुल मोह नहीं है। धनंजय की भुजाओं को ही वह सब से मूल्यवान आभूषण मानती है। ७५ प्रेस के लिए वह अपने गहने बेच देने के लिए तैयार हो जाती है। बड़प्पन की अपेक्षा वह हमेशा छुटपन में रहने में ही आनन्द मानती है। धनंजय तथा बाबाजी भी कम-से-कम आवश्यकताओं में जीने में विश्वास करते थे। धनंजय के बारे में उपन्यासकार लिखते हैं -

> "खद्दर का फटा-मोटा जो भी कपड़ा मिल गया, वही उसका आभूषण है, बशर्ते कि वह शुभ्र हो। समाचार पत्र का संपादक है, इसलिए लिखने-पढ़ने की सामग्री तो चाहिए ही, जो उसे आसानी से मयस्सर हो जाती थी। बस, इसके अलावा उसकी व्यक्तिगत आवश्यकताएं और कुछ नहीं है।" ७६

४.३.३.४. सेवा -

सेवा के अंतर्गत राष्ट्र तथा पशु-पक्षी की सेवा का समावेश हो सकता है। सेवा-परायण पात्रों के द्वारा उपन्यासकार ने समाज को प्रेरणा देने का कार्य किया है। 'ज्वालामुखी' के अभयकुमार के मन में देश के प्रति अनन्य निष्ठा है। किसी के कहने पर नहीं, तो स्वयं की प्रेरणा से वह स्वतंत्रता-आन्दोलन में कूद पड़ता है। देश की स्वाधीनता उसका प्रमुख उद्दिष्ट था। अपने इस उद्दिष्ट की पूर्ति के लिए वह अपने प्राणों की बाजी लगाने के लिए भी तैयार है। इसलिए वह प्रार्थना करता है -

> "हे मातृभूमि ! यह जो कुछ है, सो तेरी ही सेवा में अर्पण है। मुझे शक्ति दे मां कि भविष्य में मुझे जो भी भोगना पड़े, उसे मैं सहन कर सकूं। मेरे प्राणों की आहुति देकर भी यदि तेरी मुक्ति हो सके, तो उसके लिए भी तेरा यह बालक तैयार है।" ७७

अभय ही नहीं, रामनाथ, सोमादर्जी तथा भोलानाथ पहलवान जैसे लोग भी देश के लिए मर मिटने के लिए तैयार हैं -

> "कायर बनकर क्यों भाग जाय, जो किया है, सो कबूल करेंगे और जो सजा मिलेगी, उसे मजे में भोगेंगे। जो किया है सो स्वारथ के लिए तो नहीं किया है। गलत हो या सही, किया तो है देश के लिए ही। सो देश के लिए मर मिटने की घड़ी तो आज ही आन पड़ी है। इसमें भागने या मुँह छिपाने की बात क्या है ?" ७८

इसप्रकार सामान्य जनता भी राष्ट्र की सेवा में समर्पित है।

'भग्नमन्दिर' का धनंजय भी राष्ट्र की सेवा में पूरी तरह समर्पित है। अपने साप्ताहिक पत्र 'युगान्तर' के माध्यम से वह स्वतंत्रता-पूर्व काल में अंग्रेजों से, तो स्वातंत्र्योत्तर काल में देशी शासकों से लोहा लेता है। सामान्य जनता के प्रति वह पूरी तरह समर्पित है। उसका 'युगान्तर' जनता का मुखपत्र है। उपन्यासकार लिखते हैं -

> "समाज का जरा-सा भी अन्याय, देश की कोई समस्या, कोई राष्ट्रीय अपमान या मानवता का पतन; ये ऐसी बातें थी, जो उसे जड़ से हिला देती।" ७९

राजनीति में उसे जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। राजनीति से दूर रह कर ही एक पत्रकार के नाते वह समाज एवं राष्ट्र की सेवा करना चाहता था। पत्रकारिता का गांधीवादी आदर्श उसके सामने है। अपने पत्र के माध्यम से वह देशी शासकों की तीव्र आलोचना करता है, जिससे वे सही रास्ते पर आ जाये। अपने देश के साथ ही पूरे विश्व में वह रामराज्य अर्थात् धर्मराज्य की स्थापना करना चाहता है। भारत को वह शान्ति का प्रतीक बनाना चाहता है। धनंजय की तरह भोलानाथ भी पीडितों के प्रति समर्पित है। दुःखी हृदय के लिए ही उसे दर्द होता है, अहंकारियों और दुराचारियों से तो उसकी मिनट भर भी नहीं पटती। बाबाजी के हृदय में भी सेवा-वृत्ति दिखाई देती है। तभी तो वे पशु-पक्षियों के प्रति मनुष्य का-सा व्यवहार करते दिखाई देते हैं।

४.३.३.५. शराब-बन्दी (मादक वस्तुओं का निषेध) -

'भग्नमन्दिर' उपन्यास में शराब पीने वालों के प्रति आक्रोश की भावना व्यक्त करते

हुए शेवड़े जी ने मादक वस्तुओं का निषेध किया है। प्रस्तुत उपन्यास के मनमोहन बाबू तथा सोहनसिंह आदि चरित्र उपन्यासकार के आक्रोश के पात्र बने हैं।

४.३.३.६. मानवतावाद –

शेवड़े जी के उपन्यासों पर गांधी जी के मानवतावाद तथा उनके आस्थावादी दृष्टिकोण की स्पष्ट छाप है। 'ज्वालामुखी' में स्थान-स्थान पर मानवतावादी विचारों की अभिव्यक्ति हुई हैं। उपन्यास का नायक अभयकुमार एक मानवतावादी चरित्र है। तभी तो वह सभा में उपस्थित लोगों को समझाता है कि रेलगाड़ी के पुल उड़ाने से पहले लाल झण्डी लगा कर आने वाली रेलगाड़ी को सर्वनाश से बचाओ। वह केवल युद्ध में विघ्न उपस्थित करना चाहता है, निरपराध यात्रियों की मृत्यु नहीं चाहता। ८० इसी प्रकार वह जनता को यह भी बताता है किथानेदारों की पोशाकें तथा सरकारी कागजात जलाओं, पर थानेदारों के प्राणों को बचाना हमारा कर्तव्य है। ८१ गांधी जी को वह केवल भारतवर्ष के ही नहीं, सारे विश्व के, सारी मानवता के सेवक मानता है।

बाबा मानवदास भी एक मानवतावादी साधु हैं, जो भगवद्भक्ति के साथ ही मानव-सेवा का भी संदेश दिया करते थे। उनका विश्वास था कि निराकार परमेश्वर तो साकार मानव के हृदय में बसते हैं। इसलिए मानव की सेवा ही ईश्वर को पाने का एकमात्र मार्ग है। ८२

'भग्नमन्दिर' का नायक धनंजय भी एक मानवतावादी चरित्र है। जनता-जनार्दन की सेवा में उसने अपने आप को पूरी तरह समर्पित किया है। उसके मानवतावादी गुण तब और अधिक स्पष्ट दिखाई देते हैं, जब धनंजय और जोशी जी जेल के साथी थे और जब जोशी जी की बीमारी में वह उनकी सेवा करता है। उस वक्त वह रात भर जोशी जी के बिस्तर के पास बैठा रहता है और उनके हाथ-पैर दबा देता है। ८३ विवेच्य दोनों उपन्यासों में गांधी जी के आस्थावादी दृष्टिकोण को अभिव्यक्ति मिली है।

४.३.४. आर्थिक विचारधारा –

देश में आर्थिक समानता लाने के हेतु गांधी जी ने ट्रस्टीशिप, मशीनों का विरोध तथा ग्रामीण उद्योग-धंदों के प्रचार पर बल दिया था। विवेच्य दोनों उपन्यासों में गांधी जी के आर्थिक विचारों की अभिव्यक्ति हुई हैं।

४.३.४.१. संरक्षता का सिद्धान्त (ट्रस्टीशिप) -

गांधीवादी आर्थिक विचारधारा में संरक्षता के सिद्धान्त अथवा ट्रस्टीशिप का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शेवड़े जी ने इसकी चर्चा केवल 'भग्नमन्दिर' में ही की है। उपन्यास के नायक धनंजय का न्यासी-तत्त्व में पूर्ण विश्वास है। इसी कारण वह कहता है -

> " यह सत्ता भारतीय जनता की सत्ता है और हम लोग उसके न्यासी मात्र हैं, ट्रस्टी हैं।" ८४

धनंजय की धारणा थी कि सत्ता का उपयोग स्वार्थ के लिए नहीं तो जनता की सेवा के लिए होना चाहिए। सत्ता उपयोग के लिए नहीं है, सेवा के लिए है और उसकी रक्षा एक थाथी की तरह करनी चाहिए, निजी मिल्कियत की तरह नहीं। ८५

धनंजय का 'युगान्तर' कार्यालय एक परिवार की तरह था। वह खुद को कंपनी का मालिक नहीं, एक ट्रस्टी मात्र मानता था। अपने परिश्रम के द्वारा उसने सभी कर्मचारियों में यह भावना जागृत की थी कि यह संस्था मेरी है, संस्था का विकास मेरा ही विकास है। इस कारण सभी कर्मचारी बड़ी निष्ठा से काम करते थे। कर्मचारियों के साथ उसका सम्बन्ध पारिवारिक जैसा था। कहीं डांट-फटकार की या मालिक-मजदूर के रिश्ते की बात ही नहीं थी। 'युगान्तर' दैनिक में लगी हुई पूंजी का उपयोग वह एक थाथी के रुप में ही करता था। उसने अपनी निश्चित तनख्वाह बांध ली थी, उससे ज्यादा वह एक पाई भी नहीं लेता था। उल्टे, अखबार जब घाटे में चलता है, तब वह स्वेच्छा से अपना वेतन कम कर देता है। अखबार में लगी हुई पूंजी को सुरक्षित रखना, उसका अपव्यय न होने देना धनंजय अपना धर्म मानता है। कंपनी के अकाउन्ट्स वह बहुत दक्षता से रखता था। कंपनी के ट्रैवलिंग-वाउचर्स से पता चलता है कि वह अक्सर थर्ड क्लास से सफर करता था। धनंजय यह भी मानता था कि संस्था हमेशा व्यक्ति से बड़ी होती है। ८६

४.३.४.२. यंत्रीकरण-निषेध (मशीनों का विरोध) -

गांधी जी मशीनों का पूर्ण बहिष्कार नहीं चाहते थे, केवल उनकी अधिकता के विरोधी थे। 'भग्नमन्दिर' के धनंजय के विचार भी कुछ इसी प्रकार के हैं। वह भी मशीनों के सीमित उपयोग का पक्षपाती है।

४.३.४.३. ग्रामीण उद्योग-धंदों का प्रचार -

ग्रामीण उद्योग-धंदों के अंतर्गत चरखा तथा खादी महत्त्वपूर्ण हैं। विवेच्य दोनों उपन्यासों में चरखे के प्रयोग का प्रतिपादन किया है। स्वतंत्रता-पूर्व काल में राष्ट्रीय वृत्ति वाले प्रत्येक नागरिक के घर में चरखे का होना अवश्यंभावी था। 'ज्वालामुखी' के दीनबन्धु के घर में भी चरखा दिखाई देता है। अभय की माँ अपने अन्तिम दिनों में चरखा चलाते हुए दिखाई देती है। ८७

स्वातंत्र्योत्तर काल में चरखे का महत्त्व कम हो गया। फिर भी धनंजय जैसे गांधीवादी कार्यकर्ताओं के घर में चरखा अवश्य दिखाई देता है। भोलानाथ के घर में तो एक नहीं, चार चरखे दिखाई देते हैं। ८८

४.३.५. राजनीतिक विचारधारा -

शेवड़े जी ने अपने उपन्यासों में सामाजिक एवं धार्मिक समस्याओं के अतिरिक्त राजनीतिक समस्याओं का भी समाधान ढूँढा है। स्वतंत्रता-पूर्व काल में देश को ब्रिटिश दासता से मुक्त कर स्वाधीनता की प्राप्ति करना यही सर्वप्रमुख राजनीतिक उद्दिष्ट था। इस उद्दिष्ट की पूर्ति के लिए गांधी जी ने सत्याग्रह का प्रयोग किया था। शेवड़े जी गांधी जी की राजनीतिक विचारधारा से प्रभावित थे। इसीकारण ही उन्होंने 'ज्वालामुखी' में सत्याग्रह की महिमा का वर्णन किया है। स्वाधीनता-प्राप्ति के पश्चात् देश के नवनिर्माण के लिए भी शेवड़े जी गांधी-मार्ग को ही उचित मानते हैं। तभी तो 'भग्नमन्दिर' का नायक धनंजय एक सत्याग्रही के रूप में हमारे सामने आता है। इस प्रकार अभयकुमार तथा धनंजय में सत्याग्रही के समस्त गुण मिलते हैं।

४.३.५.१. सत्याग्रह -

सत्य को मान कर किसी वस्तु के लिए आग्रह करना अथवा सत्य और अहिंसा से उत्पन्न होने वाला बल ही सत्याग्रह है। इस अर्थ में 'ज्वालामुखी' का अभयकुमार सच्चा सत्याग्रही है, जो अन्त तक सत्य के पथ पर चलता है। गिरफ्तारी का उसे भय नहीं है। इतना ही नहीं, तो वह खुद थाने पर जाना चाहता है। वह कहता है कि -

> "सत्याग्रही तो वही है, जो अन्त तक सत्य-पथ पर चले। जो किया है, उसके लिए मैं कोई रियायत नहीं चाहता। जो नहीं किया

है, उसे इन्कार कर दूँगा। इसके बाद जो नतीजा हो, उसे सहर्ष सहन कर लूँगा।" ८९

अभयकुमार गिरफ्तार होते ही उस पर मुकदमा पेश किया गया। उसका वकालतनामा पाने के लिए वकील-बैरिस्टरों में होड़ लगने लगी। फिर भी अभय ने बचाव का वकील लेने से इन्कार कर दिया। उपन्यासकार लिखते हैं -

" वह वृत्ति से सत्याग्रही था। निश्चय था कि जो सत्य है, वही वह कहेगा, जो सत्य नहीं है, उससे इन्कार कर देगा। इसके बाद जो फैसला हो सो हो। " ९०

सत्याग्रह प्रतिपक्षी को कष्ट देकर नहीं, तो स्वयं कष्ट सह कर सत्य की रक्षा करना है। अभय भी स्वयं कष्ट सह कर सत्य की रक्षा करता हुआ दिखाई देता है। अभय की माँ एक गांधीवादी महिला थी। अतः वह शत्रु के प्रति भी प्रेम-भावना रखती है। अभय को गिरफ्तार करने के लिए आये पुलिस अफसरों के सिर पर अक्षत फेंकती हुई वह कहती हैं -

" तुम मेरे देशवासी हो, ईश्वर तुम्हारा भी मंगल करे।" ९१

उपन्यासकार लिखते हैं -

"जिन्होंने उसका अपमान किया, उनके लिए भी उसके दिल में स्नेह ही था।" ९२

जो मनुष्य व्यक्तिगत हानि-लाभ की भावना से ऊपर नहीं उठ सकता, वह सत्याग्रही नहीं बन सकता। अभयकुमार व्यक्तिगत लाभ-हानि की बिल्कुल चिन्ता नहीं करता है। पीएच.डी. की थीसिस अधूरी छोड़ कर वह जीवन की नई थीसिस लिखना चाहता है। सत्याग्रह का अंतिम उद्देश्य प्रेम और धैर्यपूर्वक कष्ट सहन कर विरोधी का हृदय-परिवर्तन करना होता है। अभय मानता है कि सरकारी नौकरों का हृदय-परिवर्तन करना ही अहिंसक क्रान्ति का उद्देश्य है। वह चाहता है कि उसके मरने का पश्चाताप देशवासियों की अपेक्षा फाँसी देने वालों को अधिक हो, जिससे उनका हृदय-परिवर्तन हो जाये।

'भग्नमन्दिर' के धनंजय में भी सत्याग्रही के समस्त गुण मिलते हैं। वह सत्य के पथ पर अन्त तक चलना चाहता है, चाहे उसके परिणाम कुछ भी हो। उसे मालूम है कि इस पथ पर चलते समय बहुत कष्ट उठाने पड़ते है। उसका विश्वास है कि हमेशा सत्य

पथ पर चलने वाले की ही विजय होती है। धनंजय और जोशी जी के बीच संघर्ष होते हुए भी धनंजय के मन में जोशी जी के बारे में जरा भी तिरस्कार की भावना नहीं है। उसके लिए जोशी जी हमेशा पितृतुल्य एवं आदरणीय रहे हैं। **९३** इसी कारण ही जोशी जी के निधन के पश्चात् उसे लगता है कि उसके निकट का एक घनिष्ट सम्बन्धी चला गया । **९४** और वह फूट-फूट कर रोने लगता है।

धनंजय के लिए व्यक्तिगत समस्याएँ गौण है और सामाजिक समस्याएँ प्रमुख है। इसलिए वह कहता है -

> "मैं बर्बाद हो जाऊं, इसकी चिन्ता नहीं है, पर जिन तत्त्वों और आदर्शों के लिए मैं लड़ रहा हूँ उनकी क्षति हुई, तो सार्वजनिक जीवन का कितना नुकसान होगा, जनता की शक्ति का कितना ऱ्हास होगा ... ।" **९५**

व्यक्तिगत सुखों के प्रति धनंजय एकदम बेलाग है। वह व्यक्तियों का नहीं, तो सिद्धान्तों का शत्रु है। वह दूसरे के दुर्गुणों के बजाय सद्गुणों की ओर देखता था। एकांगी विचार से कभी भी सत्य का निर्णय नहीं हो सकता, इसलिए वह हमेशा दूसरे पक्ष को भी महत्त्व देता था। गांधी जी के हृदय-परिवर्तन के तत्त्व में भी उसका विश्वास था। जोशी जी का हृदय परिवर्तन कराने के उद्देश्य से ही वह गीता को शांतिदूत बना कर जोशी जी के घर भेजता है। **९६**

४.३.६. साहित्य तथा संस्कृति के सम्बन्ध में गांधी-विचारधारा -

साहित्य तथा संस्कृति के सम्बन्ध में भी गांधी जी ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। साहित्य के क्षेत्र में गांधी जी सीधी-सादी तथा सरल भाषा के पक्षपाती थे। भारतीय संस्कृति के प्रति गांधी जी के हृदय में असीम आस्था थी तथा उसकी मूल्यवान निधियों में उनका जबर्दस्त विश्वास था। गांधी जी धर्म तथा विज्ञान के समन्वय के पक्षपाती थे। 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' में शेवड़े जी ने गांधी जी के इन्हीं विचारों पर प्रकाश डाला है।

गांधी जी की तरह शेवड़े जी सीधी-सादी तथा सरल भाषा के पक्षपाती थे। तभी तो उनके सभी उपन्यास सीधी-सादी तथा सरल भाषा में लिखे गए हैं। **'ज्वालामुखी'** तथा 'भग्नमन्दिर' में भी भाषा का वही रूप दिखाई देता है।

विवेच्य दोनों उपन्यासों में भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था की भावना व्यक्त हुई है। 'ज्वालामुखी' के नायक अभयकुमार के मन में भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध आस्था है। वह गांधी जी को इस पुराने ऐतिहासिक देश का, जिसके पीछे सहस्त्राब्दियों की संस्कृति, परम्परा और सभ्यता खड़ी है, एकमात्र जीवन्त प्रतीक मानता है। **९७** दीनबन्धु तथा उसकी पत्नी लक्ष्मी - दोनों भी भारतीय संस्कृति का निर्वाह करते दिखाई देते हैं। भारत की मूल प्रकृति अध्यात्म की है। महादेव की पहाड़ी पर रहने वाले स्वामीजी भारत में आध्यात्मिक मूल्यों की प्रस्थापना करना चाहते हैं। भारतीय संस्कृति में होने वाली धर्म और नारी की प्रतिष्ठा से अभय भली-भाँति परिचित है। भारतीय संस्कृति में 'गीता' को अनन्यसाधारण महत्त्व है। अभयकुमार, विजया तथा अभय की माँ पर भी 'गीता' का प्रभाव पड़ा है। अंत में अभय 'गीता' के उपदेश को व्यवहार में लाते हुए दिखाई देता है। **९८**

'भग्नमन्दिर' का धनंजय भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा रखता है। धनंजय तथा गीता - दोनों भी भारतीय संस्कृति का निर्वाह करते दिखाई देते हैं। भारत की मूल प्रकृति अध्यात्म की होते हुए भी धनंजय विज्ञान के महत्त्व का इन्कार नहीं करता। वह अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय का पक्षपाती है। **९९** इसी प्रकार वह राज्यसत्ता पर धर्मसत्ता का अंकुश रखना आवश्यक मानता है। भारतीय संस्कृति के प्रति उसके मन में जितनी आस्था है, उतनी ही पाश्चात्य संस्कृति के प्रति तिरस्कार की भावना है। इसी कारण वह नेहरू जी की तीव्र आलोचना करता हुआ दिखाई देता है।**१००** पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने वाली मिसेज तारामतीदेवी धनंजय के आक्रोश की पात्र बनी है। उपन्यास के अधिकतर पात्रों पर 'गीता' का प्रभाव पड़ा है। धनंजय तथा गीता पर यह प्रभाव प्रकर्ष से दिखाई देता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' - दोनों उपन्यास पूर्णतः गांधीवादी है। उपन्यासकार शेवड़े जी खुद महात्मा गांधी जी के विचारों से प्रभावित थे। इस प्रभाव को ही उन्होंने अपने उपन्यासों के पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत उपन्यासों के पात्र अपने आचरण तथा वक्तव्य के द्वारा गांधीवादी विचारों का समर्थन करते दिखाई देते हैं। विवेच्य उपन्यासों में उपन्यासकार ने गांधीवादी आध्यात्मिक विचारधारा के साथ-साथ आचार-विषयक, आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विचारधारा को भी सफल अभिव्यक्ति दी है।

उद्धरण सूची –

१. 'अनन्त गोपाल शेवड़े और उनका साहित्य'. डॉ. शं.ना.गुंजीकर, पृ.१९०

२. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.१४२

३. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.१०

४. 'अनन्त गोपाल शेवड़े और उनका साहित्य', डॉ. शं.ना.गुंजीकर, पृ. ८१

५. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.३३

६. वही, पृ.१२५

७. वही, पृ.१३६

८. वही, पृ.१४१

९. वही, पृ.१५३

१०. वही, पृ.१५६-१५८

११. वही, पृ.१६६

१२. वही, पृ.१५९

१३. वही, पृ.४४

१४. वही, पृ.२४

१५. वही, पृ.२७

१६. वही, पृ.१२६

१७. वही, पृ.१६०

१८. वही, पृ.६०

१९. वही, पृ.६५

२०. वही, पृ.१७०

२१. वही, पृ.६९-७०

२२. वही, पृ.७१

२३. वही, पृ.९१

२४. वही, पृ.५९

२५. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.१०

२६. वही, पृ.१६९

२७. वही, पृ.१०

२८. वही, पृ.७१

२९. वही, पृ.२८३

३०. वही, पृ.२८२

३१. वही, पृ.३८

३२. वही, पृ.३८

३३. वही, पृ.२९६

३४. वही, पृ.१४४

३५. वही, पृ.२३

३६. वही, पृ.१८७

३७. वही, पृ.१८७

३८. वही, पृ.६४

३९. वही, पृ.२६८

४०. वही, पृ.९०

४१. वही, पृ.२६७

४२. वही, पृ.२६८

४३. वही, पृ.२०२

४४. वही, पृ.२४५

४५. वही, पृ.२५२

४६. वही, पृ.२६०

४७. 'अनन्त गोपाल शेवड़े और उनका साहित्य', डॉ. शं.ना. गुंजीकर, पृ.२२

४८. वही, पृ.६३-६४

४९. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.१४४

५०. वही, पृ.१५३

५१. वही, पृ.९५

५२. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.२१३

५३. वही, पृ.१८६

५४. वही, पृ.९१

५५. वही, पृ.१८७

५६. वही, पृ.२०२

५७. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.१४२

५८. वही, पृ.८१

५९. वही, पृ.१६०

६०. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.१६३-१६४

६१. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.१८४

६२. वही, पृ.२७

६३. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.२६७

६४. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, 'दो शब्द' से उद्धृत

६५. वही, पृ.१६६

६६. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.२३०

६७. वही, पृ.२८५

६८. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.११

६९. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.२६४

७०. वही, पृ.२८

७१. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.५२

७२. वही, पृ.८०

७३. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.६५

७४. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.५४

७५. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.३८

७६. वही, पृ.२९

७७. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.१२८

७८. वही, पृ.९५

७९. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.२९

८०. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.५१

८१. वही, पृ.५२

८२. वही, पृ.७२

८३. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.५७

८४. वही, पृ.१०

८५. वही, पृ.७३

८६. वही, पृ.२६२

८७. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.१८४

८८. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.२६७

८९. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.१२५

९०. वही, पृ.१३४

९१. वही, पृ.१२६

९२. वही, पृ.२५

९३. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.२१३

९४. वही, पृ.२९८

९५. वही, पृ.२४४

९६. वही, पृ.२०१

९७. 'ज्वालामुखी', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.२३

९८. वही, पृ.१६७

९९. 'भग्नमन्दिर', अनन्त गोपाल शेवड़े, पृ.२८३

१००.वही, पृ.२७६